

सारंगी मैला

आदरणीय रंग साहेब,
सादर चरण स्पर्श.

आपका नाराज़ होना वाज़िब था, मुझे भी स्वयं निराशा हुई थी ब्रोशर देखकर यकीन मानिये की मैंने पूरी ओ-शि-श की थी, किन्तु बम्बई में छप रहा था अतः मेरी चरीधि से बाह्य था. आप यदि उसका मूल्य डिमार्शिन देखेंगे तो पायेंगे की वह वास्तव में अलग था. प्रूफ की तरफ मेरा ध्यान गया ही नहीं था अन्यथा मैंने वह ठीक कर लिया होता. पिछले कई माह से हम लोगों की मानसिक स्थिति का परिचायक है यह. आप से बिलकुल बात नहीं हो पाई इसका मुझे रंग है. आपसे मैं बहुत कुछ कहना चाहता था किन्तु समय ही नहीं था.

निराशा और अनिश्चय के समय में मुझे आपकी आवश्यकता महसूस होती है. सतह तारीख का आपका फोन पेरिस से आया था मैं विश्वास से भर उठा था. आपसे जितनी भी बातें हुई उससे मुझे लगा कि इस बार के काम से

सारंगी मैला

आप निराश हुओ हूँ. मैं क्या करूँ?
मैं क्यों जाऊँ? मुझे नहीं पता. मैं
सिर्फ काम करता चाहता हूँ. और काम
करते-से मुझे जो अगति मिलती है. वह
मैं बर्बात नहीं कर सकता. मैं लगातार
काम करना चाहता हूँ. मैं जल्दी में नहीं
हूँ, मैं चिल्ला भी नहीं रहा हूँ और न
ही मैं चीरे बोलता चाहता हूँ. मैं चाहता
हूँ मुझे स्पष्ट सुना जाये, समझा जाए.
मैं अवसरवादी नहीं हूँ. मेरी-स्पष्टता
को अवसर मिले. उसे समय चाहिए.
मैं कभी भी नहीं करता हूँ कि प्राप्त
अवसर का लाभ लिया जाए. आपका
मत मेरे लिए एक गंभीर संकट ले-
कर आया है. कुछ ही लोग हैं जो
मुझे समझ सकते हैं. उनमें आप सर्वोपरि-
हैं मेरा पूरा विश्वास है कि आप
मेरी काशिश को समझ सकते हैं. आपके
द्वारा बोला गया एक भी नकारात्मक
मेरे लिए कई संकट खड़े कर देता है.
इस क्षेत्र को आप मुझसे ज्यादा जानते
और समझते हैं. मैं तो अभी एक नन्हा
सा पौधा हूँ. जिसमें उगते की अगति
तो असीम है. किन्तु मैं उसे भीषण

सारंगी मैला

रेगिस्तान में छाया चाहिए है अन्यथा वह
जल जाएगा - मर जाएगा.

आप तो जानते हैं. गोलेश में आप
यदी नहीं कह दें तो कल जो उसे पसंद
करते थे वे आज बाहर फेंक देंगे। मैंने
अपनी शक्ति, अपने मोच और अपनी समझ
से जो कुछ भी यह किया था वो अपने
समय की शाश्वतता है. आज मैं यह कभी
नहीं करूंगा कि किसी भी अवसर का
दुरुपयोग करूँ। कैसे कर सकता हूँ?
मेरी इतनी हेसियत कहाँ? आप के मान
से जो सम्मान मुझे मिला वह असंभव था
पिछले आठ नौ वर्षों में जो प्रताड़ना मिली
उन्में यह सम्मान मेरे लिए बहुत है. आपने
पहली बार मेरे 'चिट्ठाकार' को पहचाना
और गगह दी. मेरी आपसे गुजारिश है
कि आप वह विश्वास रखें और आप
पायेंगे कि आपकी नज़रे ~~भी~~ चोखा
नहीं खा सकती है।

मैं आने वाले समय में जल्दी
ही आपको एक रक्त और लिखूंगा क्यों कि
यह जो राजनीतिक परिवर्तन हो रहे हैं
अमें मुझे अपना निर्णय लेना है। ओपाज
लोते पर पता चलेगा कि क्या संभव
है? मैं इन दिनों बहुत परेशान रहा हूँ

सारंगी मैला

और केरल कैम्प में पुनः तटस्थ होकर
विचार करना चाहता हूँ।

युष्मद् निश्चित ही अपना कार्यक्षेत्र एवं
श्रमण का आनंद ले रहा होगा उसे
आप प्रेरी तरफ से नये साल की
पुष्कराब्ध की शीतिभेगा में उसे श्री. स्वतः
लिख रहा हूँ। ओपाक में उसकी
अनुपस्थिति पिछले दिनों हमने बहुत
महसूस की है.

आपका

-10.11.81

आपका

पुनश्च: इस बार आपके स्वास्थ्य में शुभ
परिवर्तन नज़र आया है.